Dr. Priti Ranjan
Assistant Professor
Deptt of History
H.D Jain College
B.A Part - I
Topic - Aitihasik Manav.

कुछ अन्य प्रमुख स्थल हैं - प॰ बंगाल में बीरभानपुर, गुजरात में लंघनाज, तमिलनाडु में टेरी समूह, म॰प्र॰ में आदमगढ़ और राजस्थान में बागोर, गंगाघाटी में सरायनाहरराय एवं महादाह दो महत्वपूर्ण स्थल हैं। ये (सरायनाहरराय एवं महादाह) भारत के सबसे पुराने मध्यपाषाण कालीन स्थल हैं। ये पहले ऐसे स्थल हैं, जहाँ से स्तंभगर्त का साक्ष्य मिलता है, अर्थात् इस काल के लोगों ने झोपड़ियाँ निर्मित की थी और इसमें निवास किया होगा। पुरापाषाण कालीन लोग शैलाश्रयों में रहते थे। मानवीय आक्रमण या युद्ध का प्रांरभिक साक्ष्य सरायनाहरराय से प्राप्त हुआ है।

नवपाषाण काल :-

इस काल का आधारभूत तत्व है - खाद्य उत्पादन और पशुओं को पालतू बनाए जाने की जानकारी का विकास। 'नियोलिथिक' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सर जॉन लुबाक ने 1865 ई॰ में किया था। नवपाषाण की निम्नलिखित महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं:-

कृषि कार्य का प्रारंभ, पशुपालन का विकास, पत्थर के औजारों का घर्षित एवं पॉलिशदार उपकरणों का निर्माण तथा ग्राम समुदाय प्रारंभ।

विश्व स्तरीय संदर्भ में नवपाषाण युग की शुरुआत लगभग 9000 ई॰ पू॰ में मानी जाती है, पर भारत में बलूचिस्तान के मेहरगढ़ से कृषि का प्रारंभिक साक्ष्य मिलता है। यह लगभग 7000 ई॰ पू॰ पुराना है। प्रायः ऐसा माना जाता है कि हस्तनिर्मित मृद्भांडों की उत्पत्ति सर्वप्रथम खाद्य उत्पादक बस्तियों का अनिवार्य लक्षण था, किन्तु नवीन अनुसंधानों ने यह सिद्ध कर दिया कि बहुत से क्षेत्रों में आरंभिक खाद्य उत्पादक स्थलों पर मृद्भांड के साक्ष्य नहीं मिलते। इन्हें मृद्भांड-पूर्व नवपाषाण स्थल कहा जाता है।

उत्तर पूर्वी → मध्य गंगाघाटी व पूर्वोत्तर राज्य इसमें आते हैं। मध्य गंगा के महत्वपूर्ण स्थल है - चिरांद (छपरा) चेचर, सेनुवार, ताराडीह आदि। इसी तरह पूर्वी भारत में असम, मेघालय व गारो की पहाड़ियों में कुछ स्थल नवपाषाण कालीन मिले है। 'मरकदोला' सबसे पूरब की बस्ती है तथा डियोजल हेडिंग से झूम की खेती का साक्ष्य मिला है जो पूर्वोत्तर पहाड़ी क्षेत्र में है। गंगाघाटी में चिरांद में सर्वाधिक हड्डी के उपकरणों का ढेर मिला है।

(iii) दक्षिण भारत

यहाँ प्रारंभिक अधिवास शुष्क दक्कन पहाड़ी भागों में पाया गया है। बेलारी तथा पिकलीहल (कर्नाटक) दो प्रमुख स्थल है। इसके अतिरिक्त नागार्जुन कोंड, ब्रह्मगिरि, मास्की, हल्लूर, संगनकल्लु आदि स्थल है। दक्षिण भारत में प्रयुक्त होने वाली पहली फसल रागी थी। नवपाषाण काल में कृषि यहाँ गौण ही थी। यहाँ नवपाषाण काल 1000 ई० पू० तक रहा। इस समय यहाँ के लोगों द्वारा लोहे का प्रयोग किया जाने लगा था। प्रारंभ में ही मृदभांडों का प्रयोग भी प्रारंभ किया गया। अतः यहाँ यह महापाषाण कालीन संस्कृति के रूप में विकसित हुआ। महापाषाण (मेगालिथ) कब्र के ऊपर रखे जाने वाले बड़े-बड़े पत्थरों को कहा जाता था। नवपाषाण काल में दक्षिण भारत में ~~खेती~~ खेती एवं कुदाल का प्रयोग होता था।

नवपाषाण युग के लोगों के द्वारा व्यवहार में लाए गए उपकरणों, कुल्हाड़ियों आदि के आधार पर बस्तियों के तीन भाग किए गए हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों को बतलाते हैं :-

① उत्तर पश्चिम → कश्मीर एक महत्वपूर्ण नवपाषाण स्थल है। कश्मीर में बुर्जहोम एवं गुफकराल - ये दो महत्वपूर्ण स्थल हैं। कश्मीर के स्थलों की अग्रलिखित महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं - गर्त निवास, मृदभांडों की विविधता, पत्थर व हड्डियों के विभिन्न औजारों का प्रयोग तथा सूक्ष्म पाषाण उपकरणों का अभाव। बुर्जहोम में भूमि के नीचे निवास का साक्ष्य मिलता है। यहाँ के लोग शिकार करते व मछली पकड़ते थे। परंतु संभवतः यहाँ के लोग कृषि से भी परिचित थे। यहाँ से प्राप्त सबसे महत्वपूर्ण साक्ष्य है - पालतू कुत्ते का मालिक के शव के साथ दफनाया जाना। उत्तर पश्चिम में मेहरगढ़ भी एक महत्वपूर्ण नवपाषाण कालीन प्रमुख स्थल है। मेहरगढ़ में गेहूँ की तीन ~~किस्म~~ तथा जौ की दो किस्में प्राप्त हुई हैं। यहाँ के लोग संभवतः खजूर का भी उत्पादन करते थे। यहाँ के लोग यहाँ के लोग कच्ची ईंटों के आयताकार मकान में रहते थे। उत्तर पश्चिम में स्वात घाटी में सरायखोला एक महत्वपूर्ण स्थल था।

बेलनघाटी में कुछ महत्वपूर्ण नवपाषाण कालीन स्थल निम्नलिखित हैं - कोल्डीहवा, चोपानीमांडो और महागरा। कोल्डीहवा से वन्य एवं कृषि जन्य दोनों प्रकार के चावल मिले हैं। जिनकी कालावधि 6000 से 5000 ई०पू० है। चोपानीमांडो से संसार में मृदभांड के प्रयोग के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं।

इस काल में नक्काशी और चित्रकारी – दोनों रूपों में कला का विकास हुआ।

विंध्य क्षेत्र में स्थित भीमबेटका में विभिन्न कालों की चित्रकारी देखने को मिलती है। प्रथम काल में उत्तर पुरापाषाण काल की चित्रकारी में हरे व गहरे लाल रंग का उपयोग हुआ है।